ASV Deoria: A Brief Report

संक्षिप्त आंकलन :-

<u>केन्द्र १- मुसहर बस्ती सखवनियाँ :-</u>

मूलतः मुसहर समुदाय के लोग निवास करते है इस बस्ती में, जिनकी शिक्षा बिल्कुल ही नगण्य है, परन्तु आशा द्वारा शुरु किये गये शिक्षण केन्द्र से यहां का माहौल बदला है, जो परिवार के मुखियां बच्चों के साथ कच्ची शराब बैठ कर पीते थे, अब वहीं अपने बच्चों को पड़ते देख खुद के अन्दर भी सुधार ला रहे है तथा बच्चों को भी पड़ने के लिए समझाते है। जो बच्चे बिल्कुल ही शिक्षा से दूर थे, वो अब कापीयों और कलमों के साथ लिखने तथा पड़ने की ललक लिए सीखने का प्रयास कर रहें हैं तथा उनके अन्दर बदलाव भी हुआ है।

<u>केन्द्र २- बाड़ी टोला दलित बस्ती :-</u>

अधिकाशंतः दलित और कुछ पिछड़े वर्ग के निर्धन छात्र यहां पड़ने आते है, इन बच्चों के परिवार में थोड़ा बहुत पड़ाई के प्रति ललक पहले से थी, अभी यहां पर प्राथमिक शिक्षा पर आधारित पाठय प्रणाली के अनुसार शिक्षा देने का प्रयास किया जा रहा है-,

<u>केन्द्र ३- भीखमपुर रोड :-</u>

मूलतः बिहार के पूर्ववर्ती जिलो के रहने वाले लोग यहां पर प्लास्टिक की झोपड़ी डाल कर रहते है, इनका मुख्य पेशा देवरिया रेलवे स्टेशन पर सीमेंट व खाघ की बोरिया इकटठा करना तथा उनकी ढुलाई करना है, इनके बच्चों को पड़ने लायक बनाने के साथ अक्षर ज्ञान तथा अंकगणितीय का ज्ञान अब तक कराया गया है- कुल मिलाकर इनका ध्यान अब शिक्षा के प्रति आकर्षित हो रहा है-

<u>केन्द्र ४- जिलाधिकारी आवास के पीछे :-</u>

यहां पर सफाईकर्मी मजदुर रहते है, हालांकि इनकें अन्दर शराब पीने तथा जुआ खेलने की बहुत ही बूरी प्रवृत्ति है, फिर भी इस बुरे माहौल में इनके बच्चों को इकटठा करके पड़ाया जा रहा है। इनके अन्दर पड़ने की ललक के साथ-साथ विषयों के बारे में स्पष्टता के साथ आगे पड़ते रहने के लिए प्रोत्साहित करना, साथ ही प्राथमिक के पाठयक्रम के अनुसार इनको पड़ाया जा रहा है-

<u>केंन्द्र ५- रामानन्द कन्या जुनियर स्कूल :-</u>

पॉच गावों के युवक-युवतियॉ द्वारा इस विघालय की शुरुआत की गयी थी, इस विघालय में पिछड़े वर्ग तथा दलित वर्ग के छात्र-छात्रायें पड़ते है, अब

तक विघालय ग्रा० पं० भवन में चलता था, लेकिन इस वर्ष से टीन सेड की व्यवस्था वहीं कुछ दूरी पर की गयी है, चुंकि बच्चों की संख्या बड़ने के बाद वहां चलाना संभव नही था, यहां पर कक्षा एल. के. जी. से आठवी तक की शिक्षा दी जा रही है-

नोटः- उपरोक्त केन्द्रो पर जो शिक्षक पड़ाते है के द्वारा आवश्यकता के अनुसार कुछ दूसरी जगहो पर केन्द्र चलाये जा रहे है-

१- ओवरब्रिज के नीचे देवरिया :-

कुष्ठ रोगियो तथा भीख मांगने वालो के बच्चों को यहां इकटठा करके पड़ाया जा रहा है चूँकि इनके बच्चे कहीं पड़ते नही थे इस लिए यहां पर केन्द्र शुरू किया गया है।

२- दोघरा गांव :-

इस गांव में नगीना मुसहर तथा तीन अन्य दूसरे बच्चो की मौत भुख से हुई थी, यह मामला सर्वोच्च न्यायलय दिल्ली तक गया था, इसी गांव में केन्द्र चल रहा है चूंकि इनके भोजन की समस्या है, पड़ाई तो बहुत दुर है इसलिए इनको पड़ाया जा रहा है।

३- सिसई परासपुर :-

मूलतः नट और मुसहर समुदाय का यह गांव है नजदीक में कोई शिक्षा की व्यवस्था न होने तथा गरीबी के चलते यहां के बच्चे पड़ नही पाते है, इसलिए यहां बच्चों को पड़ाया जा रहा है।

मिड डे मील प्रोग्राम :-

उपरोक्त परियोजना (देवरिया कुशीनगर) में पोषाहार का जो कार्यक्रम चल रहा है, वह विल्कुल ही आवश्यक है, क्योकि पड़ने वाले अधिकतर बच्चे भोजन की कमी के चलते भुख से पिड़ीत रहते है इसी का कारण है कि पूरे उ०प्र० में सबसे ज्यादा भुख से मौते देवरिया कुशीनगर में हुई है।-दुसरा इस पोषाहार वितरण से बच्चो के अन्दर प्रत्येक दिन आने की प्रतिवद्धता बड़ी है। इस लिए पोषाहार का कार्यक्रम जरुरी है।

भीखमपुर केन्द्र पर सप्ताह में दो दिन-फल, दो दिन-चना, एक दिन-लईया नमकिन और गुण और एक दिन दुग्ध विस्किट दिया जाता है, बाकी केन्दो पर केवल बिस्किट बाटॉ जाता है - अगले सत्र से एक समान पोषाहार का वितरण किया जायेगा।

केशव चन्द बैरागी

दिनांक-११.०७.२००७